"वणज"

• रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुर दीआ बुझाई राम । लाहा लाभ हर भगति है गुण महि गुणी समाई राम ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य को गुरु ने आत्मिक जीवन की सूझ बख्श दी उसके हृदय नगर में सदा परमात्मा की महिमा के कीमती रत्नों का व्यापार होता रहता है, उसको परमात्मा की भक्ति की कमाई प्राप्त होती रहती है, परमात्मा की महिमा में जुड़ के उसकी लीनता गुणों के मालिक प्रभु में हो जाती है ।

गुण महि गुणी समाए जिस आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे । बिन भगती सुख न होई दूजै पत खोई गुरमत नाम अधारे ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा खुद आत्मिक जीवन की समझ देता है वह मनुष्य प्रभु की महिमा में टिक के गुणों के मालिक प्रभु में लीन हो जाता है, वह जगत में जन्म ले के प्रभु की भक्ति का लाभ कमाता है । गुरु की मत पर चल के वह हरि नाम को अपनी जिंदगी का आसरा बनाए रखता है उसे निश्चय रहता है कि भक्ति के बिना आत्मिक आनंद नहीं मिल सकता, माया के मोह में फसने वाले ने लोक - परलोक में अपनी इज्जत गवा ली ।

वखर नाम सदा लाभ है जिस नो एत वापारि लाए । रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुर देई बुझाए ।1।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा इस नाम व्यापार में लगा देता है वह सदा नाम का व्यापार करता है, नाम का ही लाभ कमाता है । भाई ! जब गुरु आत्मिक जीवन की समझ बख्शता है तो मनुष्य के हृदय शहर में प्रभु की महिमा के कीमती रत्नों का व्यापार होने लगता है ।

माइआ मोह सभ दुख है खोटा इह वापारा राम । कूड़ बोलि बिख खावणी बहु वधहि विकारा राम ।

अर्थः- हे भाई ! माया का मोह निरा दुख ही पैदा करता है निरी माया की खातिर दौड़ - भाग आत्मिक जीवन में घाटा डालने वाला व्यापार है, इस तरह झूठ बोल - बोल के आत्मिक मौत लाने वाले मोह का जहर खाया जाता है ।

बहु वधहि विकारा सहसा इह संसारा बिन नावै पति खोई । पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिन बूझे सुख न होई ।

अर्थः- जिसके कारण मनुष्य के अंदर अनेक विकार बढ़ते जाते हैं । अनेक विकार बढ़ते जाते हैं, ये जगत भी निरा सहम का घर ही प्रतीत होता है, परमात्मा के नाम से टूट के मनुष्य लोक - परलोक में इज्जत गवा लेता है ।

आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा । माइआ मोह सभ दुख है खोटा इह वापारा । 2।

अर्थः- जिस मनुष्य को सदा माया का मोह प्यारा लगता है उसके जनम - मरण का चक्र कभी समाप्त नहीं होता । हे भाई ! माया का मोह निरा दुख ही पैदा करता है, निरी माया की खातिर दौड़ - भाग आत्मिक जीवन में घाटा डालने वाला व्यापार है ।

खोटे खरे सभि परखीअनि तित सचे कै दरबारा राम । खोटे दरगह सुटीअन ऊभे करनि पुकारा राम ।

अर्थः- हे भाई ! बुरे और अच्छे सारे जीव उस सदा कायम रहने वाले परमात्मा के दरबार में परखे जाते हैं । बुरे लोग तो दरबार में रद्द कर दिए जाते हैं, वे वहां खड़े हो के पुकार करते हैं ।

ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनम गवाइआ । बिखिआ माइआ जिनि जगत भुलाइआ साचा नाम न भाइआ ।

अर्थः- जिस मनुष्यों ने अपने मन के पीछे चल के अपना मानव जन्म गवा लिया, वह मूर्ख गवार प्रभु की दरगाह में परे फेंके जाने पर खड़े पुकार करते हैं तरले - मिन्नतें करते हैं । आत्मिक जीवन को खत्म करने वाली जिस जहर माया ने जगत को गलत रास्ते पर डाल रखा है उस में फंस के उनको सदा कायम रहने वाला हरि - नाम अच्छा नहीं लगा था ।

मनमुख संता नाल वैर करि दुख खटे संसारा । खोटे खरे परखीअनि तित सचै दरवारा राम ।3।

अर्थः- संत जन ऐसे मनुष्यों को उपदेश तो करते हैं, पर अपने मन के पीछे चलने वाला जगत संत - जनों के साथ वैर करके दुख सहेड़ता रहता है । हे भाई ! बुरे और अच्छे सारे जीव उस सदा कायम रहने वाले के दरबार में परखे जाते हैं ।

आपि करे किस आखीऐ होर करणा किछ न जाई राम । जित भावै तित लाइसी जिउ तिसदी वडिआई राम ।

अर्थः- हे भाई ! जीवों को खोटे - खरे परमात्मा खुद ही बनाता है । किसी जीव के खोटे अथवा खरे होने का गिला किसी के पास नहीं किया जा सकता । प्रभु की रजा के उलट और कुछ भी नहीं किया जा सकता ।

जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआम न फुसी कोई । जगजीवन दाता करम बिधाता आपे बखसे सोई ।

अर्थः- जिस काम में जीवों को लगाने की प्रभु की मर्जी होती है उस काम में लगा देता है, जैसे उसकी रजा होती है वैसे करवाता है । जैसे उस प्रभु की रजा होती है वैसे ही जीवों से काम करवाता है अपने आप में ना कोई जीव शूरवीर है ना ही कोई कमजोर है । जगत का सहारा दातार जो जीवों के किए कर्मों के अनुसार जीवों को पैदा करने वाला है वह स्वयं ही कृपा करता है और जीवों को सही जीवन - राह बताता है ।

गुर परसादी आप गवाईऐ नानक नामि पति पाई । आपि करे किस आखीऐ होर करणा किछ न जाई ।4। (3-569-570)

अर्थः- हे नानक ! कहः हे भाई ! गुरु की कृपा से ही स्वै भाव दूर किया जा सकता है जिसने स्वै भाव दूर कर लिया, उसने परमात्मा के नाम

में जुड़ के लोक - परलोक में सम्मान पा लिया है । हे भाई ! जीवों को खोटे - खरे परमात्मा खुद ही बनाता है किसी जीव के खोटे या खरे होने का गिला किसी के पास नहीं किया जा सकता । प्रभु की रजा के उलट और कुछ भी नहीं किया जा सकता ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"